HRHIN/2003/10425 सृ1960853113
HR/RTK/10/2011-13 विक्रम संवत् 2069
दयानन्दाब्द 189

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 9 अंक : 40 रोहतक, 21 मार्च, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

क्षमा के महादानी स्वामी दयानन्द

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

विश्व में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने मारने वाले को क्षमा कर दिया। किसी ने भारी नुकसान करने पर क्षमा कर दिया। किसी ने चोट मारने वाले को क्षमा कर दिया, पर स्वामी दयानन्द की क्षमा, इन सभी क्षमा करने वालों से एक अलग ही स्थान या कीमत रखती है। उनकी दानशीलता सर्वोपरि है। वैसे तो महर्षि नेअपने जीवन में एक नहीं दो नहीं, दस नहीं, अनेक स्थानों पर अपनी दानशीलता का परिचय दिया है। यहाँ हम केवल चार-पाँच ही उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जो इसी भाँति हैं—

(1) राव कर्णसिंह को क्षमा किया-मिती ज्येष्ठ बदी 13 सं० 1975 तदनुसार सन् 1868 में स्वामी जी कर्णवास में अपनी पुरातन कुटिया में ही आकर ठहरे। उसी समय गङ्गा स्नान का मेला था। सहस्रों नर-नारी एकत्रित हुए थे। उसी समय राव कर्णसिंह भी स्नानार्थ आए हुए थे। जब उसने सुना कि स्वामी दयानन्द यहाँ आये हुए हैं और वे हमारे अवतारों की और गङ्गा जी की निन्दा करते हैं तो वह अपने नौकरों सहित स्वामी जी की कुटिया में आ गये। यह सायं का समय था, स्वामी जी उपदेश कर रहे थे। श्रोतागण एकाग्रचित्त उपदेशामृत-पान करने में निमग्न थे। उसी समय कर्णसिंह ने आकर स्वामी जी से कहा कि मैंने सुना है कि तुम अवतारों की और गङ्गा जी की निन्दा करते हो। स्मरण रखो! यदि मेरे सामने निन्दा की तो मैं बुरी तरह पेश आऊँगा। स्वामी जी ने कहा, मैं निन्दा नहीं करता हूँ किन्तु जो वस्तु जैसी है उसे वैसी ही कहता हूँ। तब राव बोला, "गङ्गा गङ्गेति" इत्यादि श्लोकों के नाम, कीर्त्तन, दर्शन, स्पर्शन से पाप का नाश होता है। स्वामी जी ने कहा, ये श्लोक साधारण लोगों की क्रपोल-कल्पना हैं। माहात्म्य सब गप्प हैं। पाप का नाश और मोक्षप्राप्ति वेदानुकूल आचरण से होगी, अन्यथा नहीं। यह सुनकर उसने स्वामी जी पर कुवचन वर्षा की झड़ी-सी लगा दी और आपे से बाहर हो गये और स्वामी जी के ऊपर तलवार का वार करने के लिए आगे बढ़े। वे तलवार चलाना ही चाहते थे, स्वामी जी ने झपटकर उसके हाथ से तलवार छीन ली और भूमि पर टेककर दबाव देकर तलवार के दो टुकड़े कर डाले। स्वामी जी ने कहा कि मैं संन्यासी हूँ, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़कर तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन नहीं करूँगा। जाओ, ईश्वर तुम्हें सुमति प्रदान करे। स्वामी जी तलवार के दोनों खण्ड दूर फेंककर, राव महाशय को विदा कर दिया।

(2) एक पहलवान को सबक सिखाया-यह सन् 1867 की सोरों की घटना है। स्वामी जी एक दिन उपदेश दे रहे थे। बीसियों मनुष्य दत्त-चित्त होकर श्रवण कर रहे थे। उसी समय वहाँ एक हट्टा-कट्टा, दण्ड-पेल पहलवान आ गया। एक मोटा सोटा कन्धे पर रखे सभा सरोवर को चीरता-फाड़ता सीधा स्वामी जी की ओर बढ़ा। उसका चेहरा मारे क्रोध के तमतमा रहा था। आँखें रक्तवर्ण थीं, भौंहें तन रही थीं और माथे पर त्यौरी पड़ी हुई थी। होठों को चबाता और दांतों को पीसता हुआ वह बोला-"अरे साधु, तू ठाकुर पूजा का खण्डन करता है और श्री गङ्गा मैया की निन्दा करता है, देवताओं के विरुद्ध बोलता है। झटपट बता, तेरे किसी अंग पर यह सोटा मारकर तेरी समाप्ति कर दूँ?" ये वचन सुनकर, एक बार तो सारी सभा विचलित हो गई। परन्तु श्री स्वामी जी की गम्भीरता में रत्तीभर भी न्यूनता न आई। उन्होंने प्रशान्त भाव से मुस्कुराते हुये कहा कि "भद्र! यदि तेरे विचार में मेरा धर्म-प्रचार करना कोई अपराध है तो इस अपराध का प्रेरक मेरा मस्तिष्क ही है। यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है, सो यदि तू अपराधी को दण्ड देना चाहता है तो मेरे सिर पर सोटा मार, इसी को दण्डित कर।" इन वाक्यों के साथ ही, स्वामी जी ने अपने नेत्रों की ज्योति उसकी आँखों में डालकर उसे देखा। जैसे, बिजली कौंधकर रह जाती है, धधकता हुआ अंगारा जल धारा-पात से शान्त हो जाता है, वैसे ही तत्काल वह बलिष्ठ व्यक्ति ठण्डा हो गया, श्री चरणों में गिर पड़ा, अनवरत अश्रुमोचन करता हुआ अपना अपराध क्षमा कराने की याचना करने लगा। स्वामी जी ने उसे आश्वासन दिया और कहा, "तुमने कोई अपराध तो किया ही नहीं। मुझे मारते तो कोई बात थी, अब यों ही क्यों रो रहे हो? आओ! ईश्वर तुम्हें सत्य मार्ग प्रदान करे।"

(3) बच्चों को लड्डू खिलाए-स्वामी जी लाहौर से मिती आषाढ़ बदी 9 सं० 1934 तदनुसार सन् 1877 में अमृतसर पहुँचे। यहाँ वे मियाँ मुहम्मद खाँ की कोठी में ठहरे। उनके पधारने से अमृतसर के वासियों में धर्म प्रेम उमड़ पड़ा। शत-शत और सहस्र-सहस्र पुरुष श्री दर्शनों को आने लगे। स्वामी जी ने लोगों के उत्साह को देखकर उसी दिन सायंकाल, व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया। श्री के उपदेशों को सब नर-नारी श्रद्धापूर्वक सुनते थे। यहाँ स्वामी जी ने प्रतिमा पूजन, अवतारवाद और मृतक श्राद्ध आदि मिथ्यामूलक मन्तव्यों का घोर खण्डन किया जिससे पण्डितों में हलचल मच गई। वहीं एक पाठशाला के अध्यापक पण्डित ने अपने छोटे-छोटे बच्चों से कहा, "आज कथा में हम सब चलेंगे। तुम अपनी-अपनी झोलियों में ईंटों के रोड़े भर लो। वहाँ जिस समय मैं संकेत करूँ, तुम तत्काल कथा कहने वाले पर इन्हें फेंकने लग जाना। इसके बदले में कल तुमको लड्डू दिये जायेंगे।"

वे अबोध बालक अपने अध्यापक के बहकाने में आ गये और झोलियों में ईंटों के टुकड़े लिये व्याख्यान-स्थल पर आ पहुँचे। व्याख्यान रात के आठ बजे समाप्त हुआ करता था। थोड़ा-सा अंधेरा होते ही, अध्यापक का संकेत पाकर वे अनजान लड़के स्वामी जी पर कंकड़ बरसाने लगे। एक बार तो सारी सभा चलायमान हो गई, परन्तु स्वामी जी ने सभा को तुरन्त शान्त कर दिया। पुलिस के कर्मचारियों ने अपने चातुर्य से उन उपद्रवी बालकों में से कुछ एक को पकड़ लिया और व्याख्यान की समाप्ति पर स्वामी जी के सामने उपस्थित किया। पुलिस के पंजे में पड़े हुये वे बालक चिल्लाते और फूट-फूटकर रोते थे। स्वामी जी ने उनको ढाढस बन्धाया और ईंट मारने का कारण पूछा। तब वे हिचकियाँ लेते हुए बोले, "हमको अध्यापक जी ने लड्डुओं का लोभ देकर ऐसा करने को कहा था।" स्वामी जी ने करुणा भाव से तत्काल वहाँ मोदक मँगाए और उन बालकों को बाँटकर कहा, "तुम्हारा अध्यापक तो सम्भव है, तुम्हें लड्डू न भी देवे, इसलिए मैं ही दिए देता हूँ।" फिर स्वामी जी ने उन ना-समझ बच्चों को छुड़ा दिया।

मैंने महाराजा रणजीत सिंह की जीवनी में पढ़ा था कि एक बच्चे ने आम के पेड़ से आम तोड़ने के लिए

शेष पृष्ठ 7 पर....

भाषाभास या लफ्फाजी

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

भाषा के माध्यम से मानव अपने विचार एक-दूसरे पर प्रकट करता है। भाषा मुख से निकले हुए सार्थक शब्दों या वाक्यों का वह समूह होता है जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति की शालीनता, श्रेष्ठता तथा सद्‌शिक्षा का आभास होता है। मानव का स्वाभाविक व्यवहार है कि वह नित्य प्रति घटित होने वाली अच्छी या बुरी घटनाओं पर अपने मन में उत्पन्न होने वाले उद्‌गारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त कर अपनी संवेदना, शोक या हर्ष को दर्शाता है। ठीक यही वक्त होता है उस व्यक्ति विशेष की सोच, बुद्धि, शिक्षा, संस्कार, स्वाध्याय, सत्संग तथा मनोवृत्ति का सहज परीक्षा का, कि उसके विचार सकारात्मक हैं, ईश्वरीय सत्ता से डरने वाले हैं, सहानुभूति दर्शाने वाले हैं या नकारात्मक स्वैच्छिक प्रवृत्ति दूसरों को ठेस पहुँचाने वाले हैं। एक शिष्ट व्यक्ति अपने श्रेष्ठ चिन्तन तथा कुलीन संस्कारों द्वारा किसी बुरी से बुरी घटना को भी शालीन शब्दों द्वारा प्रकट कर अनर्गल वक्तव्य से परहेज करता है। अंग्रेजी में कहा है-जैपदा इमवितम लवन चमांण पहले तोलो फिर बोलो। ऐसा नहीं कि भावावेश में बिना विचारे जो मन में आया भावोन्मत्त होकर शगूफा छोड़ दिया। मनुष्य के लिए जहाँ अभिव्यक्ति का अधिकार है वहाँ नैतिकता व शालीनता का कर्त्तव्य भी साथ जुड़ा हुआ है। विशेषकर उच्च पद पर आसीन अधिकारी और नेता को तो अपने पद की गरिमा को सदैव दृष्टिगत रखकर ही सोच-समझकर वक्तव्य देना चाहिए।

संस्कृत में एक श्लोक है, "**सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात सत्यम-प्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रूयात्, एष धर्मः सनातनः॥**" मनुष्य को चाहिये कि वह सत्य बोले और प्रिय भी बोले, अप्रिय सत्य कभी न बोले तथा प्रिय असत्य भी कभी न बोले, यही हमारा सनातन धर्म है। वर्तमान में समाचार-पत्रों में धर्मगुरुओं और राजनेताओं द्वारा भावावेश में या जल्दबाजी में बिना सोचे समझे ऐसी टिप्पणियां दी जाती रही हैं कि जिनसे घटना घटित व्यक्ति तो आहत होता ही है, जनसाधारण नागरिक भी अशोभनीय लफ्फाजी से दुःखी है। समझ नहीं आता वे अपने मन के उद्‌गारों को कटु भाषा में प्रकट कर क्या संदेश देना चाहते हैं। एक दिन एक टी.वी. चैनल पर लाइव बहस में भारत के राजनेता निजी हमले पर उतर आए उन्हें शायद यह ध्यान नहीं रहा होगा कि लाइव चैनल पर लाखों दर्शक उन्हें देख रहे हैं। कांग्रेस सांसद् संजय निरूपम ने राज्यसभा सदस्य स्मृति ईरानी से कहा, "स्मृति आप मुझे मेरा अतीत याद दिला रही हैं, लेकिन आप क्या थी? आप तो पैसों के लिए टी.वी. पर ठुमके लगाती थी और आज राजनीतिक विश्लेषक बन गई।" जब निरूपम नहीं रुके तो स्मृति ईरानी ने कहा कि "कांग्रेसी सांसद् निरूपम और उन बदमाशों में कोई अंतर नहीं जो दिल्ली की सड़कों पर छेड़छाड़ व बलात्कार करते हैं।" इसके आगे की अशोभनीय वाद-विवाद ने एक-दूसरे की परतें उतारी। यह घटना बड़ी अशोभनीय, दुर्भाग्यपूर्ण एवं शर्मनाक थी।

देशराज आर्य

पश्चिम बंगाल की मुख्यमन्त्री ममता बनर्जी ने एक फोटो पत्रकार से कहा, "आप सभी असभ्य हैं, आप हर जगह क्यों भागते फिरते रहते हैं। यहाँ से निकलें नहीं तो मैं आपको एक जोरदार तमाचा मारूँगी।" एक बार उन्होंने अपने सुरक्षा गार्डों से उनकी गाड़ी लाने में देर हो गई तो उनको खरी-खोटी सुनाई और कहा कि ऐसी लापरवाही के लिए चांटा मारना चाहिए। इससे कुछ दिन पहले उन्होंने किसी बात के संदर्भ में प्रधानमन्त्री को लेकर कहा था कि "क्या वे प्रधानमन्त्री को पीटें?" ममता जी भावावेश में बिना सोचे-समझे अपने पद और गरिमा का ध्यान न रखते हुये अनायास यह सब कह गई। बेशक उनकी भावना ऐसी नहीं रही होगी। माकपा नेता वृंदा करात ने सूर्यनेकली दुष्कर्म के मामले की पीड़ित पर केरल के सांसद् के. सुधाकरन द्वारा दी गई टिप्पणी पर खेद व्यक्त कर निंदा की। सांसद् महोदय ने रिटायर्ड जज आर. बसंत के फैसले का "मामला दुष्कर्म का नहीं बल्कि बाल वेश्यावृत्ति का है।" का समर्थन किया था। गत वर्ष 16 दिसम्बर 2012 को दिल्ली में गैंगरेप के विरोध में प्रदर्शन कर रही महिलाओं पर कांग्रेस सांसद् अभिजित् मुखर्जी ने कहा था कि "दिन में प्रदर्शन कर रही महिलाएं मेकअप से रंगी पुती होती हैं। दिन को वे प्रदर्शन करती हैं, रात को डिस्कोथेक पहुँच जाती हैं। वे कहीं से भी छात्राएँ नजर नहीं आती।" उनके इस बयान पर देशभर में तीखी प्रतिक्रिया जताई गई। ऐसा बयान उनको शोभा नहीं देता था। बाद में स्वयं मुखर्जी और उनकी बहन शर्मिष्ठा ने माफी मांग कर अफसोस जताया। कहा उनकी भावना किसी को ठेस पहुँचाना नहीं थी। आशाराम बापू ने भी दिल्ली गैंगरेप की छात्रा को दोषी माना तथा उन्होंने बचाव का एक अजीब-सा उपाय सुझाया कि "लड़की गुरुमन्त्र का जाप कर उन लड़कों को भाई बना लेती तो इतनी यातना नहीं झेलनी पड़ती।" अब बापू को कौन कहे कि उस विकट घड़ी में छः शराबी राक्षसों का मुकाबला करते हुये उस लड़की को गुरुमन्त्र कहाँ याद रहता? उन सब पर खून सवार था, वे उसे बहन कब समझने वाले थे? बापू को राक्षसों के वहशीपन और नृशंसता का ध्यान नहीं आया। उनके इस बयान पर सभी ने एतराज जताया। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा ममता शर्मा ने कहा कि आशाराम बापू दुष्कर्मियों का मनोबल बढ़ाने की बातें कर रहे हैं।

जयपुर के कांग्रेस चिन्तन शिविर में गृहमन्त्री सुशील कुमार शिंदे ने कहा कि भाजपा और संघ के प्रशिक्षण शिविरों में हिन्दू आतंकवाद को बढ़ावा दिया जाता है। हमें ऐसी सूचनाएँ मिली हैं जिन पर हमारी निगाह है। इस बयान का समर्थन संसदीय कार्यमन्त्री कमलनाथ ने भी किया और कहा कि पूरी पार्टी शिंदे का समर्थन करती है। गृहमन्त्री के इस बयान पर पाकिस्तान ने तुरन्त प्रतिक्रिया की और कहा कि आतंकवाद तो भारत में ही है। गृहमन्त्री स्वीकार कर रहे हैं, पाकिस्तान का नाम बेवजह लिया जाता है। देशभर में इस बयान पर खेद प्रकट किया गया तथा बयान वापिस लेने का सांसदों ने दबाव बनाया। बजट सत्र प्रारम्भ से पहले गृहमन्त्री शिंदे ने अपना बयान वापिस लिया तथा कहा उनके पास ऐसे कोई सबूत नहीं हैं। गृहमन्त्री अपने ऊट-पटांग बयानों से विवादित होते जा रहे हैं। राज्यसभा में उन्होंने महाराष्ट्र के भंडारा दुष्कर्म मामले में पीड़ित तीनों लड़कियों के नाम उजागर कर दिये। भाजपा नेता अरुण जेतली ने आपत्ति जताई तो बयान वापिस लिया। गलती का एहसास होने पर जेतली का धन्यवाद भी किया। लोकसभा में आतंकवाद पर बहस के दौरान पाकिस्तानी आतंकी हाफिज सईद को 'मी' कहकर संबोधित किया। दिल्ली दुष्कर्म के खिलाफ राजधानी में विरोध प्रदर्शन करने वालों की तुलना नक्सलियों से की। गृहमन्त्री से ऐसी आशा नहीं थी।

अब प्रश्न यह है कि किस वक्त पर कैसी टिप्पणी की जाये? यह उस व्यक्ति विशेष की अपनी सूझ-बूझ व सोच होती है। नेताओं को बयान देने में नियन्त्रण नहीं रहता। आम बोलचाल की भाषा में शब्दों की महत्ता के बारे में ध्यान नहीं रखा जाता। परन्तु सभ्य-शालीन समाज में शब्दों का प्रयोग पर हमें कहीं न कहीं मर्यादाओं का पालन तो अवश्य करना पड़ेगा। शास्त्रों में निर्देश है कि व्यक्ति जितना बड़ा (पद, ज्ञान, आयु, धन और यश में) होगा उतना ही नम्र, शील, धीर, गम्भीर, मृदुभाषी और दूसरों का हित चाहने वाला होगा। आज के राजनेताओं के सम्भवतया अपने पद से गर्व और दर्प की अनुभूति होती है। बयान देते समय वे ध्यान नहीं रखते कि जो टिप्पणी की जा रही है वह समय, परिस्थिति, हालात, अवसर एवं प्रसंगानुसार है भी या नहीं। पुरानी कहावत है कि विवाहोत्सव पर तो गीत-गानों में गालियां भी मीठी लगती हैं परन्तु युद्ध या आपात्काल के समय ये गालियाँ विष का कार्य करती हैं।

यह भी सर्वविदित है कि सामान्य (छोटे) व्यक्ति की भूल या गलती कम हानिकारक होती है परन्तु बड़े व्यक्ति की भूल या गलती बहुत बड़ी तथा भयंकर होती है। कहावत है कि भेड़ की लात घुटने के नीचे परन्तु घोड़े की लात तो प्राणलेवा हो जाती है। उचित बात को उचित वक्त पर कहना हर व्यक्ति के बस की बात नहीं होती। कुछ शख्सियत ईश्वर-प्रदत्त गुणों से भरपूर होती हैं तथा वे समयोचित, प्रसंगानुसार, सर्वप्रियवाणी से सबको मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। महापुरुषों की जीवनियां पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने अच्छे साहित्य का नियमित स्वाध्याय किया। विषय के गूढ़ रहस्य तक पहुँचने की उनकी साधना रही। उनके श्रीमुख से अशिष्ट शब्द कभी निकले ही नहीं। ईश्वर ने मनुष्य को सोच-विचार के लिए बुद्धि प्रदान की है। किसी भी व्यक्ति को कहीं भी तथा किसी भी वक्त पर कुछ बोलने से पूर्व चिन्तन कर लेना आवश्यक है कि जो बात वह कहने जा रहा है वह कहने लायक है भी या नहीं? विशेषकर घर से बाहर तो इतना ध्यान अवश्य रखा जाए ताकि उसे शर्मिन्दा नहीं होना पड़े।

* ओ३म् *

आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्

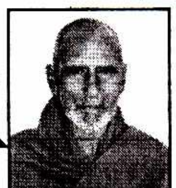

-: वेद-मन्त्र :-

महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ॥ 9॥291॥

(सामवेद)

शब्दार्थ—प्रभु [अद्रिवः] = हैं (न दृ)—न विदारण करने वाले हैं। परन्तु कब? जबकि मनुष्य संसार के प्रलोभनों में न फंसता हुआ अपने जीवनपथ पर आगे और आगे बढ़ता जाता है। प्रभु के साथ अपनी चैतन्यता व उसी की अल्परूपता (ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः) के सम्बन्ध को भूलकर जब यह प्रकृति की ओर ही झुक जाता है और इसकी सारी शक्ति प्राकृतिक सम्पत्ति को जुटाने में ही लग जाती है तो उस समय वे प्रभु उसके लिए [वज्रिवः] = वज्र वाले बन जाते हैं। वज्र से उसका वे विदारण कर देते हैं। सो मेधातिथि तो निश्चय करता है कि ऐ प्रभो! [त्वाम्] = आप [महे च शुल्काय] =महान् भी धनराशि के लिये [न परादीयसे] = मेरे से छोड़े नहीं जाते हो। कितना भी धन हो। क्या उससे कभी मनुष्य की तृप्ति हो सकती है? वास्तविकता तो नचिकेता के शब्दों में यह है कि 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' = धन से मनुष्य सदा अतृप्त रहता है। दुनिया भर का सोना 'एकस्यापि न पर्याप्तम्'= एक भी व्यक्ति के लिए पर्याप्त नहीं। सो धन के लिए प्रभु को क्यों छोड़ना? [स-हस्राय न] = आमोद-प्रमोदमय जीवन के लिए भी आप नहीं छोड़े जाते। नचिकेता को यम 'ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके' उन काम्य पदार्थों का भी प्रलोभन देते हैं जो कि संसार में नहीं मिल सकते। परन्तु नचिकेता यह कहकर उनका त्याग करते हैं कि 'सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः' ये आमोद-प्रमोद व विलास तो इन्द्रिय शक्तियों को जीर्ण करते हैं। इनके लिए प्रभु को छोड़ना कोई बुद्धिमत्ता है? [न अयुताय] = मैं इसलिए भी प्रभु को नहीं छोड़ता कि मैं फले-फूले पुत्र-पौत्रों वाले परिवार से संयुक्त बना रहूं। नचिकेता को यम कहते हैं कि आत्मतत्त्व की बात न कर 'शतायुषः पुत्र पौत्रान् वृणीष्व'=सैकड़ों वर्ष जीने वाले पुत्र पौत्रों को ले ले। जो व्यक्ति ऐसा करके प्रभु को छोड़ देता है वह समय आने पर अनुभव करता है कि उसने सदा साथ देने वाले प्रभु को छोड़ उनको अपनाया जो कि अन्त तक साथ नहीं दे सकते। 'एकः प्रजायते जन्तुः एक एव विलीयते'=हम अकेले ही संसार में आते हैं और अकेले ही चले जाते हैं—प्रभु के अतिरिक्त कोई भी अन्त में साथ नहीं देता। [न शताय] = पूरे सौ वर्ष जीने के लिए भी मैं आपको नहीं छोड़ता। 'स्वयं च जीव शरदो यावद् इच्छसि' इस प्रलोभन का उत्तर नचिकेता ने बड़े सुन्दर शब्दों में दिया था कि 'अपि सर्वं जीवितमल्पमेव' कि कितना भी लम्बा जीवन हो—वह छोटा ही है उसमें तृप्ति नहीं। ययाति ने दुगुना जीवन प्राप्त करके यही अनुभव लिया। सो प्रभु का परादान कभी भी प्रलोभन के लिए ठीक नहीं। वास्तविकता तो यह है कि यह सैकड़ों प्रकार के ऐश्वर्य भी तो अन्ततोगत्वा उसी प्रभु के हैं। प्रभु मिले, तो ऐश्वर्य तो अपने आप मिल गये। सो यह मेधातिथि तो किसी भी प्रलोभन में न फंसता हुआ उस पवित्र प्रभु की ओर चलता है और इसी से 'मेधातिथि' नाम वाला होता है। इसने प्रभु को पाकर सभी कुछ पा लिया। इसके विपरीत एक दूसरे व्यक्ति ने सब कुछ जुटाने की कोशिश में प्रभु को खोकर सभी कुछ खो दिया।

भावार्थ—न धन के लिये-न विलास के लिये-न समृद्ध कुटुम्ब के लिए और न ही दीर्घ जीवन के लिए हम प्रभु को छोड़ें। प्रत्युत इस आत्मा के लिये सम्पूर्ण पृथिवी व पार्थिव भोगों को हम छोड़ने वाले हों। **'आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।'**

—आचार्य बलदेव

शोकसभा सम्पन्न

श्रीमती रामोदेवी आर्या धर्मपत्नी श्री सूरतसिंह ग्राम बाघपुर (झज्जर) का आकस्मिक निधन 9 मार्च 2013 को हो गया था, उनकी शोकसभा उनके निवास-स्थान पर 17 मार्च 2013 को वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ करवाया गया।

इस अवसर पर उनके परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त श्री ओमप्रकाश बेरी पूर्व विधायक, डॉ० तरुणकुमार सुपुत्र प्रो० शेरसिंह जी, डॉ० ओमप्रकाश, श्री कृष्ण सांगवान, श्री स्वतन्त्रानन्द शास्त्री, खजानसिंह हैडमास्टर, प्रवीण दहिया, हर्षकुमार भनवाला एम.डी., बलवन्त सिंह बेरी, श्री राजेन्द्र कादियान पूर्व बैंक मैनेजर, उज्ज्वला शर्मा, रामप्यारी, रामरती, भरतसिंह दूबलधन, मा० दरियावसिंह आदि शामिल थे। **—डॉ० जगवीर सिवाच, ग्राम बाघपुर (झज्जर)**

गाँधी जी और गोडसे

❑ डॉ० शशिकान्त गर्ग

सुप्रसिद्ध स्तम्भ लेखक श्री कुलदीप नैयर का एक लेख तीस जनवरी को कुछ अखबारों में प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि 30 जनवरी वह तारीख है, जब एक धर्मान्ध हिन्दू ने गाँधी जी की हत्या कर दी थी।

उनकी यह प्रस्तुति सत्य नहीं है, नाथूराम गोडसे ने गांधी जी की हत्या धार्मिक कारणों से नहीं की थी, क्योंकि गांधी और गोडसे दोनों का ही धर्म हिन्दू था। गोडसे ने गांधी जी की हत्या राष्ट्रीय कारण से की थी। सन् 47 के अन्तिम दिनों में गांधी जी पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने के लिए सरकार पर दबाव डाल रहे थे। केन्द्रीय नेताओं नेहरू जी तथा सरदार पटेल के गांधी जी की इस बात को मानने से इंकार कर दिया था, तब गांधी जी अपनी मांग मनवाने के लिए आमरण अनशन पर बैठ गये थे, जिसके कारण सरकार को गांधी जी के प्राण बचाने के लिए पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने पड़े। उस समय एक तोले सोने का भाव मात्र 40 रुपये था। इस प्रकार गांधी जी ने आज के हिसाब से देखें तो पाकिस्तान को खरबों रुपये दिलवाए थे। नेहरू और सरदार पटेल की भांति नाथूराम गोडसे भी पाकिस्तान को रुपये देने के पक्ष में नहीं था। इसी से असन्तुष्ट होकर उसने गांधी जी की हत्या की थी। उस घटना में गांधी और गोडसे दोनों ने ही प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों का उल्लंघन किया था। गांधी जी को अपनी बात वाणी अथवा कलम से समझानी चाहिए थी, इसी प्रकार गोडसे को भी गांधी जी का विरोध वाणी अथवा कलम के द्वारा करना चाहिये था, पिस्तौल नहीं उठानी चाहिए थी। यदि गांधी जी ने पाकिस्तान को रुपये दिलाने के लिए अनशन नहीं किया होता, तो गोडसे के पास गांधी हत्या के लिए कोई और कारण नहीं था। उस घटना के कारण दोनों ने ही प्राण गंवाए थे। परन्तु गांधी जी ने पाकिस्तान के लिए और गोडसे ने हिन्दुस्तान के लिए प्राण न्यौछावर किए।

सम्पर्क-म०नं० 152/2, अहीरवाड़ा, कुंदन कालोनी, बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद मो० 9891757939

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य परिवार से सम्बन्धित सुशिक्षित दो कन्याओं हेतु वर की आवश्यकता है विवरण निम्न प्रकार है—

(1) जन्मतिथि-24.04.1978, योग्यता-एम.ए.बी.एड., ट्रांसलेशन डिप्लोमा (K.U.K.), योग डिप्लोमा (दिल्ली) एन.सी.सी., राष्ट्रीय खिलाड़ी, कद-5'-4", रंग-साफ, वर्जित गोत्र-नैन, राणा, दहिया।

(2) जन्मतिथि-29.10.1980, योग्यता-एम.फिल. (Phy. Edu.), योग डिप्लोमा-गोल्ड मेडलिस्ट इन योग, कद-5'-5", रंग-साफ, वर्जित गोत्र-नैन, राणा, दहिया।

सम्पर्क सूत्र :-

मा० रामसिंह, Mob.: 9315810944, 9996316318

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल — 22 से 24 मार्च 2013
2. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत — 22 से 24 मार्च 2013
3. आर्यसमाज रायपुर रोडान जिला करनाल — 22 से 24 मार्च 2013
4. आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द — 22 से 24 मार्च 2013
5. श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (पलवल) — 22 से 24 मार्च 2013
6. आर्यसमाज अलाहर जिला यमुनानगर — 26 से 27 मार्च 2013
7. आर्यसमाज भड़ताना, जिला जीन्द (नवसस्येष्टि/होली) — 27 से 28 मार्च 2013
8. आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द — 29 से 31 मार्च 2013
9. स्वामी भीष्म जयन्ती समारोह, घरौंडा (करनाल) — 30 से 31 मार्च 2013
10. दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब) — 1 से 13 अप्रैल 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

ज्ञानमार्गों की रक्षा करो

❑ देवराज आर्य, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, आर्य टैण्ड हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द

गतांक से आगे...

2. वेदमन्त्र का अगला वाक्य कितने महत्त्व का है जरा विचार करें— **'ज्योतिष्मतः पथो रक्षिधिया कृतान्'** अर्थात् बुद्धि द्वारा बनाये गये प्रकाश मार्गों की, कैसा ज्ञान है वह ? बुद्धि से परिष्कृत किया हुआ ऋषियों द्वारा प्रदत्त और ज्योति से युक्त, ज्ञानमार्गों पर चलकर उसकी रक्षा करें। जैसे सूर्य अपने तेज से भौतिक जगत् को प्रकाशित करता है उसी प्रकार विद्वान्, बुद्धिमान् और ज्ञानी लोग अपनी बुद्धि के प्रकाश से ज्ञान मार्गों को प्रशस्त करते हैं। कैसा है वह ज्ञान ? वह ज्ञान कोई साधारण ज्ञान नहीं है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान जो सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों के हृदय में दिया गया और उन्होंने उस ज्ञान को अपनी बुद्धि द्वारा संसार के कल्याणार्थ संसार के जन-जन तक पहुँचाने का प्रयत्न किया। ऐसे उपयोगी और हितार्थ ज्ञान की हम रक्षा करें और उसको प्रसारित करनेका पूर्ण यत्न करें। कैसे हो इस वेदज्ञान का प्रचार-प्रसार ? ऐसे उपयोगी वेदज्ञान की रक्षा बुद्धि द्वारा वेद-शास्त्रों को पढ़ने, उनकी शिक्षाओं पर आचरण करने, अपना कुछ समय कर्त्तव्य भाव से समाज में वेदप्रचार हेतु लगाने से वेदज्ञान की रक्षा तथा प्रचार-प्रसार हो सकता है। इसके लिये ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट का त्याग तथा तीनों ऐषणाओं से दूर रहकर तप, त्याग एवं कर्त्तव्य पालन को प्राथमिकता देनी पड़ेगी। महर्षि दयानन्द ने इन ज्ञान मार्गों की रक्षा के लिये आर्यसमाज के तीसरे नियमोद्देश्य में लिखा है कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।''

सब आर्य-बन्धु आत्म-चिन्तन करके देखें, अपने मन में बुद्धिपूर्वक विचार करें, क्या हम आर्यसमाज के तीसरे नियम या किसी भी नियम की ठीक प्रकार से पालना कर रहे हैं ? जब हम वेद का पढ़ना-पढ़ाना जो कि परम-धर्म हमारे लिये लिखा है उसको ही जीवन में नहीं उतार सके तो वेद-विद्या के ऊपर आचरण कैसे होगा और आठवें नियमानुसार अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कैसे हो जायेगी ? जब यह सब कुछ नहीं कर सकते तो **'ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्'** का नारा सार्थक नहीं हो सकता। यही कारण है कि आज आर्यसमाज आगे बढ़ने की अपेक्षा, ज्ञानमार्गों की रक्षा और वेदज्ञान का प्रचार करने के स्थान पर ऐषणाओं में उलझ गया है। चारों वर्ण और चारों आश्रम धन और मान के पीछे अपनी पूरी शक्ति के साथ लगे हुए हैं। विशेष रूप से संन्यास आश्रम तो तप, त्याग, ज्ञान, समानता एवं छल-कपट से रहित होना चाहिये। क्योंकि 'संन्यास' का अर्थ ही त्याग है। परन्तु इस आश्रम को ग्रहण करने के बाद भी पदों की प्राप्ति की लालसा बढ़ी हुई है। ऐषणायें मन में बसी हुई हैं। बताओ फिर कौन करेगा इन ज्ञानमार्गों की रक्षा और ज्ञान का प्रचार ? क्या है यह 'ज्योतिष्मतः पथः' अर्थात् ज्ञान और प्रकाश का मार्ग ?

मान लीजिये आपने किसी धार्मिक कार्य जैसे वेदप्रचार, अनाथ-पालन, गोरक्षा, राष्ट्र-उत्थान, धर्मार्थ औषधालय अथवा मानवता के हितार्थ दान देना प्रारम्भ किया है, आपके दान देने की प्रक्रिया किसी कारण बन्द हो गई है। परन्तु आपने दान देने की ऐसी श्रेष्ठ परम्परा आरम्भ कर दी जो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित करती रहेगी एवं उनके लिये प्रेरणा का स्रोत भी बनी रहेगी। जैसे दानवीर भामाशाह देश, धर्म, जाति की रक्षा के लिए दान तथा महाराणा प्रताप मान और सम्मान की परम्परा छोड़ गये जो आने वाली सन्तान के लिये प्रकाश स्तम्भ का काम करेगी।

महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त घोर तप, त्याग और कठिन परिश्रम से प्राप्त सदियों से लुप्त वेदज्ञान के कोष को संसार के समक्ष रखकर सदा-सदा के लिये वेदज्योति के प्रकाश से मानवता को जगमग कर दिखाया। उन्हीं की प्रेरणा से दीर्घकाल से सोई आर्य जाति जागी और अपने आपको पहचाना। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर और इस महान् ग्रन्थ से प्रेरणा लेकर कितने ही आर्य-वीरों ने अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये हँसते-हँसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। कितने वीर और वीरांगनाएँ भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिये अपना जीवन बलिदान कर राष्ट्र की रक्षा और सम्मान हेतु 'ज्योति-पथ' की राहें निश्चित करके चले गये। वेदमन्त्र यही शिक्षा दे रहा है कि ज्ञान-विज्ञान, वेद सूत्रों और प्रकाश के मार्गों की अपनी बुद्धि के द्वारा रक्षा करो।

3. वेदमन्त्र में आगे कहा गया है कि—**'अनुल्वणं वयत जोगुवामपोः'** जीवन रूपी ताना-बाना बुनते समय जो तन्तु टूट जायें उन्हें पुनः जोड़ लेना चाहिये। यदि जोड़ते समय बीच में गांठ पड़ जाये तो कोई बात नहीं, अपनी ज्ञान ज्योति का क्रम जारी रहना चाहिये। जिस प्रकार अपने घरों, सड़कों और मार्गों को हम बार-बार साफ करते हैं फिर भी कई बार उनमें कूड़ा-कर्कट, ईंट-पत्थर या रेत-मिट्टी रह जाती है। उसी प्रकार धर्म मार्ग में भी काम करते समय ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, स्वार्थ और भ्रष्टाचार रूपी कंकर-पत्थर रुकावट डाला करते हैं। अपने ज्ञान, सहनशीलता और कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए ऐसे श्रेष्ठ कामों को दूषित करने वाले लोगों से बचकर ज्ञान मार्गों की रक्षा करते हुए, आगे बढ़ते चले जायें। जिन प्राचीन वैदिक प्रथाओं को हम भूल गये हैं उन्हें पुनः जाग्रत करने की विशेष आवश्यकता है।

'अनुल्वणम्'-विद्वानों और साम-गान करने वाले ऋषियों के उलझन रहित अर्थात् यथोचित कर्मों के द्वारा ज्ञान-विज्ञान को आगे बढ़ाओ। जो श्रेष्ठ वैदिक कार्य ऋषि, मुनि, महात्मा लोग ज्ञान मार्गों की रक्षा के लिये करते आये हैं, उन यज्ञीय और परोपकारमय कर्मों को हम भी निःस्वार्थ भाव से लोकहित के लिये करने में अपने आपको समर्पित कर दें। क्योंकि **'परोपकार-पुण्याये, पापायः परपीडनम्'** के अनुसार निष्काम भाव से प्राणिमात्र की सेवा करने में कहीं भी कोई उलझन पैदा नहीं होती। जितनी भी उलझनें पैदा होती हैं, वे सब स्वार्थ के कारण होती हैं। महर्षि दयानन्द ने उस समय अत्यन्त उलझे हुए मार्ग को समझने के लिये कठोर परिश्रम और रात-दिन तप करके वैदिक ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा पूरी हो जाने पर गुरुदक्षिणा के रूप में अपना सारा जीवन ही गुरु को अर्पण कर देते हैं तथा अपना सम्पूर्ण जीवन, बल, बुद्धि और ज्ञान संसार को वैदिक ज्योति से ज्योतिर्मय करने के लिए समर्पित कर देते हैं। सदियों से लुप्त हुए वैदिक ज्ञान को संसार के समक्ष प्रस्तुत कर प्रसारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गुरु के समक्ष प्रतिज्ञा को पूर्णरूपेण निभाया। अपने जीवन की कोई परवाह न करते हुये वैदिक ज्ञान की रक्षा और प्रचार-प्रसार को अपना परम धर्म समझते हुये, अन्त में 'हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुये अपने जीवन की आहुति देकर ऋषियों द्वारा प्राप्त वेद ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते हुए संसार के लोगों को वेद-पथगामी बना गये।

एक नहीं अनेक ऋषि-महात्मा, विद्वान्, राष्ट्रभक्त, दानी और वीर अपने अपने क्षेत्र में हमारा मार्गदर्शन करके चले गये। अब यह हमें देखना है कि हम इन ज्ञान-मार्गों की रक्षा करने और ऋषियों-मुनियों के ऋण से अनृण होकर अपना कर्त्तव्य पालन करने में कहाँ तक सफल होते हैं।

4. **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'**-मन्त्र में अन्तिम भाग में परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद मनुष्य को 'मनुष्य' मननशील बनने और दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव वाली सन्तान उत्पन्न करने अथवा श्रेष्ठ, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यनिष्ठ एवं वेदपथ पर चलने वाले समाज के निर्माण की योजना पर चलने के लिए प्रेरित कर रहा है। मन्त्र का यह बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है। वेद कहता है 'मनुष्य बनो' परन्तु लोगों के सामने जब यह बात कहते हैं तो वे उत्तर देते हैं कि संसार में लोगों की क्या कमी है ? इस धरती पर वर्तमान समय में चार अरब के लगभग जन-संख्या है। क्या अपको इनमें कोई मनुष्य ही नहीं दिखाई देता ? मैंने बैठकर विचार किया तो मनुष्य एवं पशु में स्पष्ट अन्तर दिखाई देने लगा। कर्मशास्त्र इस विषय में कहते हैं कि—

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

जिन लोगों का मन विद्या में रत नहीं है अर्थात् जो व्यक्ति विद्या के स्वरूप को न जानकर केवल अक्षरज्ञान में रत होकर अपने आपको विद्वान् समझते हैं और ब्रह्म प्राप्ति के साधन कुछ भी नहीं करते, वेद शास्त्रानुकूल जिनका आचरण नहीं, आत्मकल्याण के मार्ग का जिनको पता नहीं, विद्या पढ़कर जिसने इहलोक और परलोक का सुधार नहीं किया, विद्या के द्वारा जिन्होंने तीन अनादि पदार्थों को जानकर मानव जीवन के परम उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का यत्न नहीं किया तो केवल पुस्तकें पढ़कर साक्षर होने से मनुष्य नहीं बन सकते। मनुष्य बनने के लिये विद्या की आवश्यकता है। विद्या क्या है ? **'सा विद्या या विमुक्तयः'** विद्या वह है जो अज्ञान और बन्धन से छुटकारा दिला दे, जो आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त कर दे, जिसे प्राप्त कर विवेकशील होकर ज्ञान के प्रकाश में चलता हुआ दूसरों को भी मानवता के मार्ग पर ले चलने में अपने कर्त्तव्य की पूर्णता समझे।

क्रमशः अगले अंक में....

परम दयालु ईश्वर

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

हे मनुष्य लोगो! आओ अपने मिलकर जिसने इस संसार में आश्चर्य रूप पदार्थ रचे हैं उस परम दयालु ईश्वर को सदैव धन्यवाद देवें। ईश्वर की यह कम दया है कि प्रकृति के सभी पदार्थ दान में दे रखे हैं और पदार्थों के गुणों को जानने के लिए ऋग्वेदादि वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में दिया, जिससे सब मनुष्यों को सुख और ऐश्वर्य की वृद्धि हो। वही परम दयालु ईश्वर अपनी अपार कृपा से धर्मयुक्त पुरुषार्थ से गुण और गुणी को जानकर सब पदार्थों के सम्प्रयोग से पुरुषार्थ की सिद्धि करते हैं, उन मनुष्यों की सदैव रक्षा करता है।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहम-नृतात् सत्यमुपैमि॥

(यजु० अ०1 म० 5)

ईश्वर ने सब मनुष्यों को नियम से सेवन करने योग्य धर्म का उपदेश दिया है जो कि न्याययुक्त परीक्षा किया हुआ सत्य लक्षणों से प्रसिद्ध और सबका हितकारी तथा इस लोक अर्थात् संसारी और परलोक अर्थात् मोक्ष का हेतु है यही सबको आचरण करने योग्य है और उससे विरुद्ध जो कि अधर्म कहलाता है वह किसी को ग्रहण करने योग्य कभी नहीं हो सकता क्योंकि सर्वत्र उसी का त्याग करना है।

मनुष्यों का आचरण दो प्रकार का होता है एक सत्य और दूसरा झूठ अर्थात् जो पुरुष वाणी मन और शरीर से सत्य का आचरण करते हैं, वे देव कहलाते हैं और जो झूठ का आचरण करते हैं वे असुर राक्षस आदि नामों के अधिकारी होते हैं।

परमेश्वर ही पुरुषार्थ और अच्छी-अच्छी क्रियाओं के करने की हमारे लिये वेद के द्वारा उपदेश की प्रेरणा करता है। किस प्रयोजन के लिए उपदेश करता है और आज्ञा देता है, सुख और सुखस्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति तथा सत्य विद्या और धर्म के प्रचार के लिए। मनुष्यों को दो प्रयोजनों में प्रवृत्त होना चाहिए अर्थात् एक तो अत्यन्त पुरुषार्थ और शरीर की आरोग्यता से चक्रवर्ती राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति करना और दूसरे सब विद्याओं की अच्छी प्रकार पढ़कर उनका प्रचार करना चाहिये। किसी मनुष्य को पुरुषार्थ को छोड़कर आलस्य में कभी नहीं रहना चाहिये।

ईश्वर आज्ञा देता है कि सब मनुष्यों को अपना दुष्ट स्वभाव छोड़कर विद्या और धर्म के उपदेश से औरों को भी दुष्टता आदि अधर्म के व्यवहारों से अलग करना चाहिये तथा उनको बहुत प्रकार का ज्ञान और सुख देकर सब मनुष्य आदि प्राणियों को विद्या, धर्म, पुरुषार्थ और नाना प्रकार के सुखों से युक्त करना चाहिये।

जो ईश्वर जगत् को धारण कर रहा है वह पापी दुष्ट जीवों को उनके किये हुये पापों के अनुकूल दण्ड देकर दुःखयुक्त और धर्मात्मा पुरुषों को उत्तम कर्मों के अनुसार फल देके उनकी रक्षा करता है। ईश्वर ही सब सुखों की प्राप्ति आत्मा की शुद्धि कराने और पूर्ण विद्या का देने वाला विद्वानों के स्तुति करने योग्य तथा प्रीति और इष्ट से सेवा करने योग्य है, दूसरा कोई नहीं।

विद्वान् मनुष्यों को उचित है कि विद्वानों के समागम वा अच्छे प्रकार अपने पुरुषार्थ से परमेश्वर की उत्पन्न हुई प्रत्यक्ष सृष्टि अर्थात् संसार में सकल विद्या की सिद्धि के लिये सूर्य, चन्द्र, अग्नि और जल आदि पदार्थों के प्रकाश से सबके बल की वृद्धि के अर्थ अनेक विधाओं को पढ़कर उनका प्रचार करना चाहिये अर्थात् जैसे जगदीश्वर ने सब पदार्थों की उत्पत्ति और उनकी धारण से सबका उपकार किया है वैसे ही हम होगों को भी नित्य प्रयत्न करना चाहिये।

ईश्वर ने आज्ञा दी है कि हे मनुष्य लोगो! मैं तुम्हारी रक्षा इसलिए करता हूँ कि तुम लोग पृथिवी पर सब प्राणियों को सुख पहुंचाओ तथा तुम को योग्य है कि वेदविद्या धर्म के अनुष्ठान और अपने पुरुषार्थ द्वारा विविध प्रकार के सुख सदा बढ़ाने चाहिये। तुम सब ऋतुओं में सुख देने के योग्य बहुत अवकाशयुक्त सुन्दर घर बनाकर सर्वदा सुख सेवन करो और मेरी सृष्टि में जितने पदार्थ हैं उनसे अच्छे गुणों को खोजकर अथवा अनेक विद्याओं को प्रकट करते हुये फिर उक्त गुणों का संसार में अच्छे प्रकार प्रचार करते रहो कि जिससे सब प्राणियों में उत्तम सुख बढ़ता रहे।

ईश्वर सबका साक्षी, सबका मित्र, सबका रक्षक, सबका पालनहार, सब सुखों को बढ़ाने वाला, सर्वशक्तिमान्, सर्वसामर्थ्ययुक्त, कभी किसी भी कार्य में किसी की सहायता नहीं लेता, बल्कि सबका सहायक है, परन्तु पुरुषार्थी का सहायक है, आलसी स्वार्थी का नहीं। God help those who help them Selva. ईश्वर का आदेश है कि सब सुखों की प्राप्ति के लिए खूब पुरुषार्थ और ईमानदारी से धन अर्जित करो, तुम सबका उपकार, विविध विद्या की वृद्धि, धर्म में प्रवृत्ति, अधर्म में निवृत्ति, क्रियाकुशलता की सिद्धि और यज्ञ क्रिया के अनुष्ठान आदि में सदा प्रवृत्त रहो।

परमेश्वर ने अग्नि और सूर्य को इसलिये रचा है कि से सब पदार्थों में प्रवेश करके उनके रस और जल को छिन्न-भिन्न कर दें जिससे वे वायुमण्डल में जाकर फिर वहाँ से पृथिवी पर आकर सबको सुख और शुद्धि करने वाले हों। इससे मनुष्यों को उत्तम सुख प्राप्त होने के लिये अग्नि में सुगन्धित पदार्थों के होम से वायु और वृष्टि और जल की शुद्धि द्वारा श्रेष्ठ गुण बढ़ाने के लिए प्रीतिपूर्वक यज्ञ करना चाहिये जिससे इस संसार के सब रोग आदि दोष नष्ट होकर उसमें शुद्ध गुण प्रकाशित होते रहें। ईश्वर का आदेश है कि हे मनुष्यो! तुम लोग परोपकार करने के लिए शुद्ध कर्मों को नित्य किया करो। यज्ञ करने से वायु और वृष्टि जल की शुद्ध द्वारा संसार का अत्यन्त सुख सिद्ध होता है।

ईश्वर का उन्नति के लिए सबको आदेश-परमेश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि यज्ञ का अनुष्ठान, संग्राम में शत्रुओं की पराजय, अच्छे-अच्छे गुणों का ज्ञान, विद्वानों की सेवा, दुष्ट मनुष्य वा दुष्ट दोषों का त्याग तथा सब पदार्थों को अपने ताप से छिन्न-भिन्न करने वाला अग्नि वा सूर्य और उनका धारण करने वाला वायु है ऐसा ज्ञान और ईश्वर की उपासना तथा विद्वानों का समागम करके और सब विद्याओं को प्राप्त होके सबके लिये सब सुखों को उत्पन्न करने वाली उन्नति सदा करनी चाहिये।

ईश्वर का उपदेश-ईश्वर का उपदेश है कि हे मनुष्यो! तुम विद्वानों की उन्नति तथा मूर्खपन का नाश तथा सब शत्रुओं की निवृत्ति से राज्य बढ़ने के लिये वेदविद्या को ग्रहण करो तथा वृद्धि का हेतु अग्नि वा सब धारण करने वाला वायु अग्निमय सूर्य और ईश्वर इन्हें सब दिशाओं में व्याप्त जानकर यज्ञ-सिद्धि का विमान आदि यानों की रचना धर्म के साथ करो तथा इनसे सबको सिद्ध करके दुःखों को दूर करके शत्रुओं को जीतो।

जिस प्रकार परोपकारी मनुष्यों पर ईश्वर कृपा करता है, वैसे ही हम लोगों को भी सब प्राणियों पर दया करनी चाहिये अथवा जैसे अन्तर्यामी ईश्वर आत्मा और वेदों में सत्य ज्ञान तथा सूर्यलोक संसार में मूर्तिमान् पदार्थों का निरन्तर प्रकाश करता है, दुर्गन्ध का नाश कर सुगन्ध को फैलाता है, जल को ताप से मेघ बनाता है और वृष्टि करता है, वैसे ही हम सब लोगों को परस्पर सबके सुख के लिये सम्पूर्ण विद्या मनुष्यों को दृष्टिगोचर कराकर नित्य प्रकाशित करनी चाहिये और उनसे हमको पृथिवी का चक्रवर्ती राज्य आदि अनेक उत्तम-उत्तम सुखों को उत्पन्न निरन्तर करना चाहिये।

परम दयालु ईश्वर-उक्त ईश्वर की वर्णन की गई व्यवस्था, मनुष्यों के लिये आदेश और उपदेश, सबकी उन्नति वृद्धि चाहने वाले परम दयालु ईश्वर, जिसने प्रकृति के सभी पदार्थ प्राणियों के सुख भोग के लिये दे रखे हैं, यह क्या कम दया है? यदि ईश्वर को जानकर, उसके आदेश, उपदेश का पालन करोगे तो जीवन में सुख प्राप्त होगा। यह ध्यान देने योग्य बात है कि ये मूर्तियाँ ईश्वर नहीं। यह अपनी भी रक्षा नहीं कर सकती। मूर्तियों को चोर चुरा ले जाते हैं। हां, मूर्तियों को भगवान् मानने वाले और दूसरों को मनवाने वाले अपना अच्छा धन्धा (व्यवसाय) चला रहे हैं। मूर्ख कमा रहे हैं, अज्ञानी मूर्खों की कमाई पर पल रहे हैं। देश की परतन्त्रता का कारण मूर्तिपूजा सबसे बड़ा कारण रहा है।

वार्षिकोत्सव (होलिकोत्सव)

आर्यसमाज नई मण्डी दयानन्दमार्ग (वकील रोड), नई मण्डी मुजफ्फर नगर (उत्तर-प्रदेश) का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव (होलिकोत्सव) दिनांक 25, 26 व 27 मार्च 2013 तक सोल्लास मनाया जायेगा। कार्यक्रम प्रातः 07.30 बजे से 11.00 बजे तक यज्ञ व वेदकथा डॉ० धीरजपाल आर्य सहारनपुर के ब्रह्मत्व में दोपहर 03.00 बजे से 06.00 बजे तक व रात्रि में 08.00 बजे से 10.00 बजे तक विद्वानों के भजन उपदेश होंगे। अतः अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त करें। अतिथियों के भोजन व आवास की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से रहेगी। **—आर.पी. शर्मा मंत्री**

मिलकर होली पर्व मनाओ

❑ पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य चलभाष : 9813845774

सकल विश्व के सब नर-नारी, मिलकर होली पर्व मनाओ।
प्रेम-प्यार की गंग बहाओ, ऊँच-नीच का भेद मिटाओ॥
नव-सस्येष्टि यज्ञ होलिका, जिसे लोग होली कहते हैं।
महापर्व है फिर भी इस दिन क्यों मदिरा के दरिया बहते हैं।
जुआ खेलते महामूढ़ जन, अज्ञानी वे दु:ख सहते हैं।
चोरी जारी नीच कर्म कर, जीवन भर व्याकुल रहते हैं।
नव-सस्येष्टि महायज्ञ का, नादानों को महत्त्व बताओ।
प्रेम-प्यार की गंग बहाओ, ऊँच-नीच का भेद मिटाओ॥
फाल्गुन मास की पूर्णमासी को, पर्व मनाया यह जाता है।
पिछला वर्ष बीत जाता है, अगला वर्ष निकट आता है।
पक जाती हैं फसल रवि की, हर नर-नारी हर्षाता है।
आर्यो का इस महापर्व से, आदि काल से ही नाता है।
यज्ञ-हवन, पुण्य-दान करो सब, स्वर्ग पुन: धरती पर लाओ।
प्रेम-प्यार की गंग बहाओ, ऊँच-नीच का भेद मिटाओ॥
अच्छी तरह समझ लो प्यारो, पर्व निराला है यह होली।
अब तक जो हो ली सो हो ली, सबसे बोलो मीठी बोली।
मिलो परस्पर गले साथियो, बना-बनाकर अपनी टोली।
मानव हो मानवता धारो, बात मान लो तुम अनमोली।
परमार्थ के काम करो तुम, सर्वजगत् को सुखी बनाओ।
प्रेम-प्यार की गंग बहाओ, ऊँच-नीच का भेद मिटाओ॥
प्रात: उठकर होली के दिन, सन्ध्या करके हवन रचाओ।
वृद्धजनों के चरण छुओ तुम, जगदीश्वर से ध्यान लगाओ।
घी-सामग्री की आहुतियाँ, अग्निदेव को भेंट चढ़ाओ।
पर्यावरण सुधारो जग का, प्रदूषण को दूर भगाओ।
पावन वैदिक धर्म निभाओ, सारे जग में आदर पाओ।
प्रेम-प्यार की गंग बहाओ, ऊँच-नीच का भेद मिटाओ॥
जुआ खेलना, मदिरा पीना, मानव का यह धर्म नहीं है।
उग्रवाद-आतंकवाद मचाना, याद रखो शुभकर्म नहीं है।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, बनो तपस्वी-परोपकारी।
राम, कृष्ण, दयानन्द बनो तुम, गुण गायेगी दुनिया सारी।
'नन्दलाल निर्भय' अब जागो, जग में नाम अमर कर जाओ।
प्रेम-प्यार की गंग बहाओ, ऊँच-नीच का भेद मिटाओ॥

संपर्क-आर्य सदन, बहीन, जनपद-पलवल (हरयाणा)

ओ३म्

[illegible]

गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) ने अत्यल्पकाल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवंव्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक्-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन सुशोभित हैं। गुरुकुल में आपको प्राचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा।

गुरुकुल की विशेषताएं-
- प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।
- 10+2 तक C.B.S.E. बोर्ड दिल्ली से मान्यता।
- सन्ध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा और नियमित दिनचर्या।
- प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।
- इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
- आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
- कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएँ।
- 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साईंस साइड।
- हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र :- 08607776897, 01262-217550

विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर गुरुकुल के सुमित व उज्ज्वल पुरस्कृत

कुरुक्षेत्र, 28 फरवरी, 2013 को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सुमित व उज्ज्वल वार्षिक विज्ञान प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर पुरस्कृत किये गए। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ० देवव्रत आचार्य ने दी। उन्होंने बताया कि 29 जनवरी से 28 फरवरी तक कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र में वार्षिक विज्ञान प्रतियोगिता पाँच चरणों में आयोजित की गई, जिसमें चार जिलों की 32 टीमों ने भाग लिया। गुरुकुल के सुमित व उज्ज्वल की टीम ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए सर्वाधिक अंक अर्जित कर ट्रॉफी पर कब्जा किया। प्राचार्य ने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र की टीम 110 अंक लेकर प्रथम स्थान पर रही, जबकि डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कुरुक्षेत्र की टीम 65 अंक लेकर द्वितीय, ओ.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैथल की टीम 25 अंक लेकर तृतीय एवं दयालसिंह पब्लिक स्कूल की टीम मात्र 20 अंक लेकर चतुर्थ स्थान पर रही। गुरुकुल की विजेता टीम को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कुरुक्षेत्र के भौतिक विभाग के डॉ० जितेन्द्र कामरा ने ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया।

गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ० देवव्रत आचार्य व उपप्राचार्य शमशेरसिंह सांगवान ने बृहस्पतिवार को सभी विजेता प्रतिभागियों को पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया तथा विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की तैयारी कराने वाले विज्ञान आचार्य धर्मवीर सिंह को शुभकामनाएं व बधाई भी दी।

—डॉ० श्यामलाल शर्मा, प्रेस प्रवक्ता, गुरुकुल कुरुक्षेत्र 9896439861

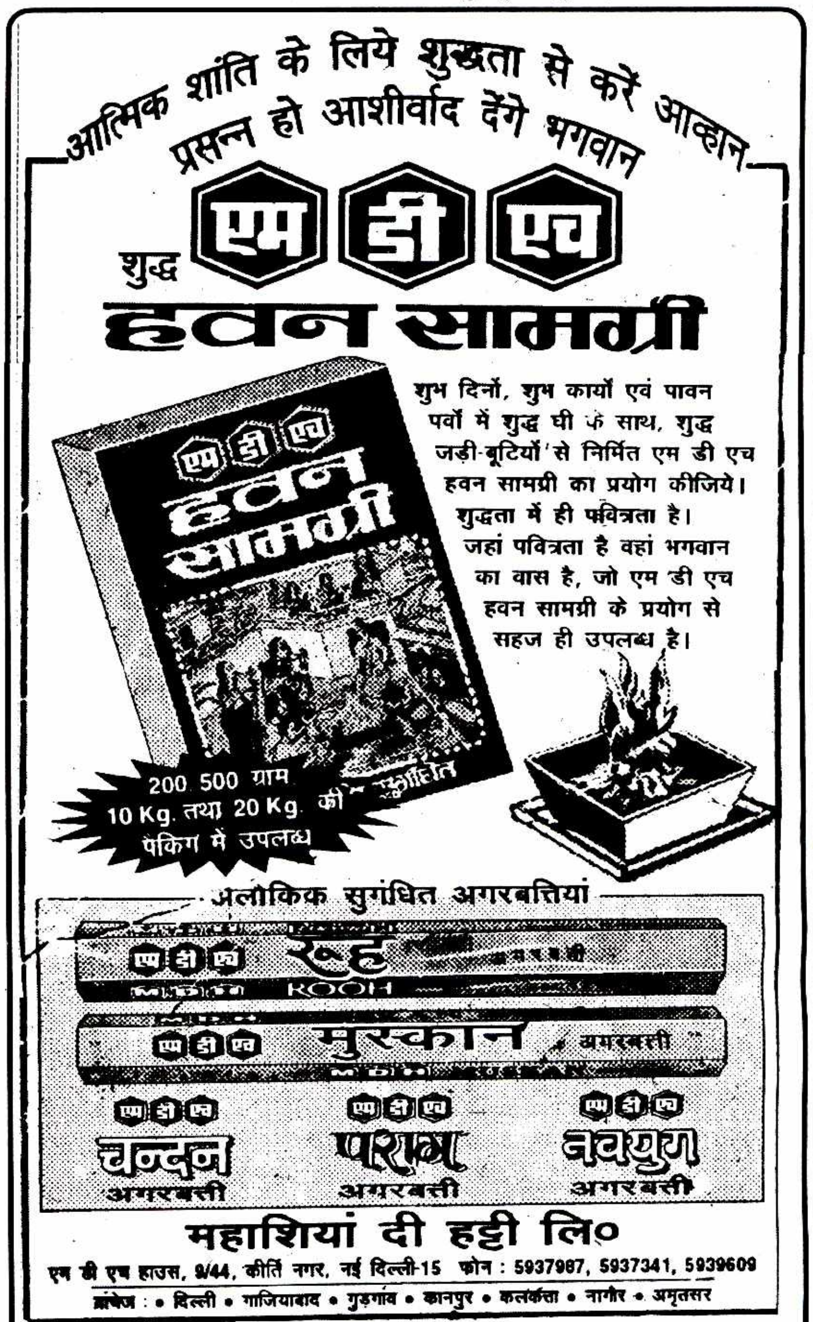

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस मनाया गया

आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी में दिनांक 7 मार्च 2013 को प्रात: ठीक आठ बजे यज्ञ (हवन) से महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का 189वाँ जन्मदिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसमें महर्षि जी के जीवन के बारे में सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों ने उपदेशों एवं भजनों के माध्यम से विस्तार से वर्णन किया।

प्रात:काल की सभा के सभापति आर्यसमाज के मुख्य संरक्षक मा० हुकमसिंह पूर्व मुख्यमन्त्री रहे अपने उद्‌बोधन में आर्यसमाज के सुधारकों एवं पूर्व के राजनेताओं के बारे में कहा कि देश की आजादी के लिये आर्यसमाज ने बहुत कार्य किये हैं। मुख्यवक्ता श्री दयानन्द आर्य रोहतक ने कहा कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य कार्य है तथा यह कार्य समाज पूर्णरूप से निभा रही है। यज्ञ के ब्रह्मा पं० कुँवरपाल शास्त्री रहे तथा यह पिछले एक वर्ष से दादरी आर्यसमाज के पुरोहित हैं। शास्त्री जी ने विशेषकर यज्ञ करवाने एवं समाज के दैनिक कार्यक्रमों में सभी को आमन्त्रित किया।

आर्यसमाज के प्रधान प्रो० देवदत्त आर्य ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया तथा सभी का धन्यवाद किया। यह कार्यक्रम रात्रि 8 से 11 बजे तक चला। इसमें उत्तर प्रदेश के युवा भजनोपदेशक पं० सहदेव 'सरस' ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से सभी श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इन्होंने महर्षि की महिमा जिसमें उनकी मृत्यु तक की घटनाओं से अवगत करवाया इनके बुजुर्ग साथी स्वामी देवानन्द जी ने भी ईश्वर भक्ति के भजनों को प्रेरणा सूत्र के आधार पर सुनाया। इस समय प्राचार्य रामनिवास यादव, चौ० तारीफसिंह, राजेन्द्र कुमार, श्रीमती सुनीता आर्या, डॉ० सुशीला आर्या, डॉ० चन्द्रप्रकाश चावला, भीमसैन प्रभाकर, मनोज आर्य, राजेश आर्य, रामसिंह आर्य, मा० दयानन्द, विद्यावती आर्या, रामप्रताप गुप्ता, डॉ० अशोक, प्रतापचन्द्र शास्त्री, जयपाल आर्य, सुरेश कुमार, डॉ० रामफल धानिया देवकराम, मा० आजाद सिंह छिल्लर तथा गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। मंच का संचालन मन्त्री प्रो० हरिश्चन्द्र आर्य ने बड़ी सूझ-बूझ से किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

बृहद् यज्ञ व वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक 23 फरवरी 2013 को खानपुर कलाँ जिला सोनीपत में वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति द्वारा वैद्य जी की स्मृति में बृहद् यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम हुआ। वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न हुआ। अनेक आर्य स्त्री-पुरुष व युवाओं ने जनेऊ ग्रहण कर हवन करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के उपरान्त सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई। इसी प्रकार दिनांक 24 फरवरी 2013 को आर्यसमाज दरियापुर का 8वां वार्षिक कार्यक्रम हुआ।

आचार्य बलदेव जी के सान्निध्य में बहुत रोचक कार्यक्रम हुआ। सर्वप्रथम आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में बृहद्‌यज्ञ किया गया। श्री धर्मपाल जी श्री संदीप जी आर्य, श्री सुरेन्द्र जी आदिअनेक विद्वानों के प्रवचन हुए। कार्यक्रम में अनेक स्त्री-पुरुष तथा युवक मौजूद थे।

—राहुल आर्य, पातञ्जल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर रोहतक

क्षमा के महादानी स्वामी दयानन्द.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

पत्थर फेंका। संयोगवश वह पत्थर आम के न लगकर महाराजा रणजीत सिंह कहीं जाकर आ रहे थे, उनके माथे पर जा लगा। बच्चा भय के मारे रोने लगा परन्तु महाराजा ने कहा, "बच्चा रोओ मत, इसमें तुम्हारा क्या दोष है? तुमने तो आम तोड़ने के लिए पत्थर आम के पेड़ पर मारा था, पर वह पत्थर वहाँ न लगकर मेरे माथे में लग गया। कोई बात नहीं, इस प्रकार कहकर बच्चे का रोना बन्द करवाया।" इस घटना से महाराजा रणजीत सिंह की बड़ी उदारता प्रकट होती है। वे क्षमा के दानी थे, पर स्वामी जी ने बच्चों का रोना तो बन्द करवाया ही, ऊपर से लड्डू भी दिये, इसलिए स्वामी जी क्षमा के महादानी हुए।

(4) जगन्नाथ हत्यारे को जीवनदान दिया-यह घटना तो सर्वविदित है कि स्वामी जी उदयपुर से शाहपुरा, अजमेर व पाली होते हुये मिती ज्येष्ठ बदी 8 सं० 2040 तदनुसार सन् 1883 को जोधपुर पहुँचे। यहाँ स्वामी जी का महाराजा यशवन्त सिंह ने भव्य स्वागत किया। कुछ दिनों बाद की घटना है कि महाराजा के पास स्वामी दयानन्द जी ने नन्हीजान वेश्या को बैठा देख लिया। स्वामी जी ने कहा, "केसरी की कन्दरा में, ऐसी कल्मष कलुषित कुक्कुरी के आगमन का क्या काम?" यह सुनकर नन्हीजान आग-बबूला हो गई और स्वामी जी को मारने का षड्यन्त्र रचने लगी। उसने जगन्नाथ रसोइया जो स्वामी जी को खिलाता-पिलाता था, उसको पटाने का निश्चय किया। जगन्नाथ को कुछ लोभ देकर अपने वश में करके उसे दूध में जहर के साथ काँच पीसकर स्वामी जी को पिलाने के लिए कहा। जगन्नाथ वैसे तो स्वामी जी का अच्छा भक्त था, पर लोभ में आकर वह इस दुष्कर्म को करने के लिए उद्यत हो गया। स्वामी जी को गहरी नींद आ रही थी इसलिये बिना कुछ विचारे उन्होंने दूध तो जगन्नाथ के हाथ से लेकर पी लिया परन्तु तुरन्त ही उन्हें ज्ञात हो गया कि दूध में जहर मिलाया हुआ था। स्वामी जी ने सेवकों से जगन्नाथ को बुलाया और कहा, "हे जगन्नाथ! तूने यह क्या किया?" स्वामी जी के भाव देखकर जगन्नाथ समझ गया, उसने अपनी गलती तो स्वीकार कर ली, पर उसने स्वामी जी जैसे महान् परोपकारी, उदार, सहृदय, प्रकाण्ड वेदों के विद्वान्, बाल ब्रह्मचारी के प्राण लेकर मानव-मात्र को जो अकल्याण किया है, इस जुल्म के लिए वह सदा के लिए कलंकित बना रहेगा। फिर स्वामी जी ने उसे 500/- रु० देकर कहा, "ऐ जगन्नाथ! तुमने काम तो बहुत बुरा किया, मुझे अभी बहुत काम करना बाकी था, पर जो हुआ सो अच्छा ही हुआ। ईश्वर को यही मंजूर था, इसमें तुम्हारा क्या दोष है? पर अब तुम जोधपुर की सीमा से रातो-रात निकलकर नेपाल चले जाओ, नहीं तो महाराजा तुम्हें मारे बिना नहीं छोड़ेगा।" इस प्रकार स्वामी जी, जगन्नाथ के प्राण बचाकर संसार में एक अद्‌भुत उदाहरण पेश करके, क्षमा के दानी ही नहीं, महादानी कहला गये।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 08901387993 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

सामाजिक चिन्तक थे चौ० छाजूराम सिद्धान्ती

❑ आर .एस. बाली, भागवी (भिवानी)

समाज के मुख्य प्रणेता के रूप में अपनी पहचान बनाने में चौ० छाजूराम सिद्धान्ती ने अपना जीवन सामाजिक सेवाओं में ही समर्पित कर दिया।

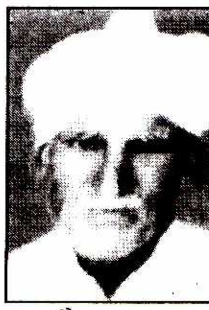

चौ. छाजूराम

इनके पिता का नाम दयाराम और माता का नाम धनकौर था। पिताजी खेती-बाड़ी का काम करते थे। माताजी घर का काम संभालती थी। चौ० छाजूराम सिद्धांती का जन्म 01 अप्रैल 1921 को गाँव भागवी में हुआ। उस समय गाँव जीन्द रियासत के आधीन था। महेन्द्रगढ़ जिले का यह शिक्षित गाँव था। इस गाँव में उच्च अधिकारी के साथ उच्च कोटि के नेता भी इस गाँव में पैदा हुए। चौ० निहाल सिंह तक्षक के साथ चौ० छाजूराम सिद्धांती के अटूट संबंध थे। वे पक्के मित्र थे।

युवावस्था में वह पढ़ाई के साथ-साथ अपने पिता के साथ खेती-बाड़ी के कामों में सहयोग देते थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द द्वारा रचित 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़ा उसके बाद उनका मन आर्यसमाज के नियमों में बंध गया। स्वामी जी की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए सामाजिक सेवाओं में रुचि लेने लगे। युवाओं को नशे से दूर रहने की प्रेरणा देते थे। उनके विचारों से बहुत से युवाओं ने सदा के लिए नशा त्याग दिया। कबड्डी उनका प्रिय खेल था। आठवीं कक्षा तक की शिक्षा बिड़ला स्कूल पिलानी से की। उस समय शिक्षा का स्तर शून्य था। लोग पढ़ाई में कम खेती-बाड़ी में ज्यादा रुचि लेते थे। जो आठवीं तक की शिक्षा ग्रहण कर जाता वह अध्यापक के पद पर कार्यरत हो जाता था। दो वर्ष तक हरयाणा के डालनवास तथा आसपास के गाँवों में अध्यापन कार्य किया।

अध्यापन कार्य छोड़कर 1944 में सेना में भर्ती हो गए। सैनिक के रूप में देश सेवा करते रहे। 1961 में अपने गांव में सेना से सेवानिवृत्त होकर आ गए। आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानने और उन पर चलने के कारण लोग सिद्धांती कहने लगे। शिक्षा को वे चरित्र निर्माण का उद्देश्य मानते थे। इसलिए उन्होंने गांव में शान्ति निकेतन हाई स्कूल का निर्माण करवाया। उनके पदचिह्नों पर चलकर पूरा परिवार किसी प्रकार का नशा नहीं करता। उच्च पर पर आसीन होते हुए उनके पुत्रों ने बीड़ी, सिगरेट और शराब को छुआ तक नहीं। नेकदिल, कर्मठ, हंसमुख, शान्त स्वभाव और अटूट इरादों के कारण वे समाज में सर्वोपरि माने जाते थे। वे अक्सर जो भी करते आत्मनिर्भर होकर करते थे। अपनी कथनी और करनी में अन्तर नहीं मानते थे। जो कुछ कहते उसे पूरा करके दम लेते थे। सामाजिक सेवा करने का जुनून उन्होंने युवावस्था में ही प्राप्त हो गया था। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में मन लगाकर काम करने लगे।

उन्हीं के अच्छे विचारों के कारण लोग आर्यसमाज से जुड़ने लगे। एक-एक करके उन्होंने अपना कारवां बना लिया। उनकी विचारधारा लोगों को प्रभावित करने लगी। सभी जातियों में भाईचारा स्थापित करने के लिए लोगों को आर्यसमाज से जोड़ा।

गत दिवस 08 फरवरी 2013 को प्रातः ओ३म् शब्द का उच्चारण करते हुए पंचतत्त्व में विलीन हो गए। 92 वर्ष की उम्र प्राप्त करने वाले गांव में सबसे बड़ी उम्र के व्यक्ति माने जाते थे। आर्यसमाज के रंग में रंगने वाले गांव के पहले व्यक्ति थे जो जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। आर्यसमाज में उनके निधन से जो रिक्त स्थान हुआ है वह कभी नहीं भर सकेगा।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

नोटिस—मकान खाली करो

❑ देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

एक व्यक्ति को किसी शहर में अच्छी नौकरी मिल गई। उसे वहाँ रहने के लिए मकान की आवश्यकता हुई। कहीं कोई अपना मकान किराये पर देने के लिये तैयार नहीं था। वैसे भी छड़े (अविवाहित) को रहने के लिये जगह मुश्किल से मिलती है। बहुत तलाश करने पर एक मकान मालिक कुछ शर्तों पर एग्रीमेंट (Agreement) लिखने पर तैयार हो गया। युवक ने अपने पहचान-पत्र के साथ मालिक की सब बातों को मानकर मकान में रहना शुरू कर दिया।

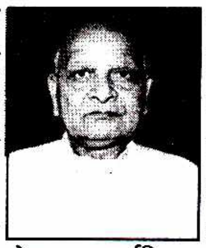

देवराज आर्यमित्र

एक-दो महीने में जब उसे अच्छा वेतन मिलने लगा तब हर सप्ताह नई-नई फिल्में देखने जाने लगा। खाना तो पहले से ही होटल में खाता था। यार-दोस्तों का सर्कल (दायरा) भी बढ़ता गया। दोस्तों के साथ मिलकर धूम्रपान मद्यपान करना सीख लिया। जब पीने पिलाने की आदत पक गई तब अपने मकान में भी मित्रों के साथ शराब पीने लगा। होटल से मंगाकर मांस-मछली अण्डे खाने लगा। मित्रमण्डली की युवतियाँ भी आने जाने लगीं।

मकान मालिक किरायेदार की यह सब हरकतें देखकर बड़ा दुःखी हुआ। उसने एक दिन किरायेदार को कहा, तुमने एग्रीमेंट में लिखी सब बातों को भुलाकर उल्लंघन कर रहे हो। कृपया शीघ्र ही मकान खाली कर दो। उस युवक ने मकान मालिक के कहने पर कुछ ध्यान नहीं दिया और वैसे ही मौज-मस्ती से रहता रहा। मालिक ने एक वकील के द्वारा नोटिस भेजा फिर भी कुछ प्रभाव नहीं हुआ। अन्त में कोर्ट में दावा कर दिया। कोर्ट से सम्मन (Summon) आने लगे लेकिन वह किसी भी तिथि-तारीख पर हाजिर नहीं हुआ। कोर्ट निर्णय के अनुसार पुलिस के द्वारा जबरन मकान खाली कराया गया।

प्रिय सज्जनो! यह मानव शरीर भी आलीशान मकान है। जिसे मालिक (ईश्वर) ने रहने के लिए दिया है। इसमें रहने के लिए एग्रीमेंट भी बनाया गया है। नियमों एवं सिद्धान्तों का पालन करते हुये एक सौ वर्ष तक इसमें रह सकते हो। यदि यम-नियमों का पालन करते रहे तो सौ वर्ष से अधिक भी रह सकते हो। यदि मालिक की शर्तों का उल्लंघन किया गया, उस युवक किरायेदार की तरह दुर्व्यसनों में फँसकर मकान को गन्दा करोगे तब मकान खाली करने के नोटिस आने लगेंगे। जैसे पहला नोटिस सिर के बाल सफेद हो गये। दूसरा आँखों की दृष्टि क्षीण हो गई। तीसरा कानों से कम सुनने लगा। चौथा मुंह में दांत नहीं रहे। पाँचवाँ घुटनों से चला नहीं जाता। इतने नोटिस आने पर भी मूर्ख मानव कुछ ध्यान नहीं देता है। मनमानी करता ही रहता है। आँखों पर चश्मा लगा लेता है। मुंह में बनावटी दांत लगा लेता है। कान में हीयरिंग मशीन लगा लेता है। परन्तु मकान मालिक के नियमों के विरुद्ध चलता रहता है। मन और इन्द्रियों के वशीभूत होकर कुपथ्य करता रहता है।

अन्त में परिणाम क्या होता है अनेक रोगों में ग्रस्त हो जाता है और सौ वर्ष से पहले ही मकान खाली करके चला जाता है अर्थात् शरीर को छोड़ देता है।

सज्जनो! ईश्वर के दिये हुये शानदार बंगले में दीर्घायु तक रहना चाहते हो तो कुकर्मों, दुर्व्यसनों को त्यागकर श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी संग्रह करना शुरू कर दो। मकान को शुद्ध पवित्र बनाकर रखो। विषय वासनाओं में फँसकर क्षीण-हीन मत बनाओ। जब अवधि पूरी हो जाये तो हँसते बोलते हुये खुशी से मकान छोड़ दो।

कृपया ध्यान दें

उन सभी ग्राहकों से निवेदन है जिनका पत्रिका का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपना वार्षिक शुल्क 150/- मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक** के नाम से शीघ्र भेजें तथा जिन ग्राहकों को पत्रिका नहीं मिल रही है, वे कृपया अपनी ग्राहक संख्या, अपना पूरा पता, पिनकोड और मोबाइल नं० साफ-साफ लिखकर भेजें जिससे उन्हें समय पर पत्रिका पहुंच सके।

—सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।